National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(61): 100-104
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

पारस जैन
शोधार्थी,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Correspondence:
पारस जैन
शोधार्थी,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

जैन प्राकृत साहित्य में वैज्ञानिक प्रमेय

पारस जैन

भूमिका

आज से लगभग २५०० वर्ष पूर्व, २४वें तीर्थंकर श्री महावीर भगवान के समवसरण में दिव्यध्वनि के माध्यम से गणधरों ने श्रुत (ग्रंथों) की रचना की। इस श्रुत का श्रवण कर परंपरा से पूर्वाचार्यों ने उसे लिखित रूप में आगम ग्रंथों के रूप में संकलित किया, जिसे द्वादशांग कहा जाता है। यद्यपि दिगंबर और श्वेतांबर परंपराओं में सभी १२ अंग आज पूर्णरूप से उपलब्ध नहीं हैं, तथापि जो भी ग्रंथ वर्तमान में उपलब्ध हैं, वे ही मूल आगम के रूप में स्वीकार्य तथा युक्तिसंगत (तर्कसंगत) माने जाते हैं।

यह समझना आवश्यक है कि तीर्थंकरों की वाणी किसी सांसारिक भाषा में नहीं होती; वह तो सर्वांग से प्रकट होने वाली ओंकारमयी दिव्यध्वनि होती है। किंतु, आचार्यों द्वारा लिपिबद्ध की गई भाषा प्राकृत रही है, अतः जैन आगम का मूल स्वरूप प्राकृत में है।

जैन दर्शन एक वैज्ञानिक दर्शन है — इसका प्रत्येक कथन तर्कसंगत, युक्तिपूर्ण तथा प्रमाणिक होता है, केवल कल्पना या विश्वास पर आधारित नहीं। आधुनिक विज्ञान का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जिसका आधार जैन प्राकृत साहित्य में हजारों वर्ष पूर्व न रखा गया हो। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से इसका स्पष्टीकरण किया जाता है —

1. सत् तथा सत्-पदार्थ (Reality and Real Matter)

आधुनिक विज्ञान जीव (living) तथा अजीव (non-living) को ही वास्तविकता के रूप में मानता है। यही दो तत्व जैन प्राकृत साहित्य में भी सत् तत्व माने गए हैं।

जैसे:

"जीवमजीवं दव्वं..."[1]

आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ती ने अपनी रचना द्रव्यसंग्रह में षट्खंडागम के आधार पर स्पष्ट कहा कि जैन दर्शन में दो मूल तत्व — जीव और अजीव — का विवेचन किया जाता है। इन्हीं से ६ द्रव्य, ७ तत्व और ९ पदार्थों का विभाजन होता है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार में कहा:

"भूदत्थेण अभिगदा जीवाजीवा या पुण्णपावं च।
आसवसंवरणिज्जरबंधो मोक्खो य सम्मत्तं।।"[2]

अर्थात् मूलतः दो ही तत्व हैं — जीव और अजीव; शेष ७ तत्व या ९ पदार्थ इन्हीं के विशिष्ट स्वरूप हैं। कुछ आचार्य पुण्य और पाप को आश्रव का ही भेद मानकर ७ तत्व स्वीकारते हैं, पर मूल दोनों तत्व ही हैं। यही दो तत्व संपूर्ण जगत का आधार हैं।

2. अणु तथा स्कंध तथ्य (Atom and Aggregate Theory)

जैन प्राकृत ग्रंथों में अणु-स्कंध तथा उनके बंध (aggregation) का जो विश्लेषण मिलता है, वह वैशेषिक, सांख्य या अन्य दर्शनों की तुलना में प्राचीन और सूक्ष्म है। आधुनिक विज्ञान भी अणु को अविभाज्य नहीं मानता और उसकी ऊर्जा शक्ति केवल 10− 3 स्तर तक जान सका है, जबकि जैन दर्शन 10− 13 तक उसकी शक्ति को सिद्ध मानता है।

तिलोयपण्णत्ति में कहा गया है:

"सत्थेण मुतिक्खेण छेत्तुं भेत्तुं च जं किरस्सक्कं।
जलयणलादिहिं णासं ण एदिसो होदि परमाणू।"[3]

अर्थात् जो तीक्ष्णतम शस्त्रों से भी छेदा या भेदा नहीं जा सकता, जो जल और अग्नि से नष्ट नहीं होता, वह परमाणु है।

और —

"जस्स ण कोइ अणुदरो सो अणुओ होदि सव्वदव्वाणं।
जावे परं अणुत्तं परमाणू मुणेयव्वा।"[4]

अर्थात्, जो अत्यंत सूक्ष्म है, उससे सूक्ष्म कोई नहीं, वही परमाणु है। सब द्रव्यों में जिसकी अपेक्षा अन्य कोई अणुत्तर न हो वह अणु होता है। जिसमें अत्यंत अणुत्व हो उसे सब द्रव्यों में परमाणु जानना चाहिए।

अणु विज्ञान के बाद अणुओं के बंध से निर्मित पदार्थ को स्कंध कहते है। स्कंध दो अणु के जोड़ से लेकर अनंत अणुओं के बंध से भी निर्मित होता है। सूक्ष्म अविभाज्य अणु तो इंद्रिय द्वारा देखा नहीं जा सकता परंतु अणुओं से निर्मित स्कंध इंद्रियों के माध्यम से ज्ञान का विषय भूत तत्त्व बन जाता है।

जो इंद्रियों से ग्राह्य विषय स्कंध में है, वे सभी विषय अणु में भी है। परंतु, अणु अति सूक्ष्म होने के कारण इंद्रियों से ग्रहण नहीं हो पाता और स्कंध अणु से निर्मित महा पिंड होने के कारण सभी गुणों की अभिव्यक्ति इंद्रियों के माध्यम से कराने में सक्षम सिद्ध होता है।

कहा भी है -

"खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसो त्ति।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेव अविभागी।"[5]

सकल-समस्त (पुद्गल पिंडात्मक संपूर्ण वस्तु) वह स्कंध है, उसके अर्ध को देश कहते हैं, अर्ध का अर्ध वह प्रदेश है और अविभागी वह सचमुच परमाणु है।

दो अणु बंध से लेकर अनंत अणुओं के बंध से निर्मित स्कंध कई भेद वाला सिद्ध होता है। अतः उसी का विभाजन करते हुए स्कंध के मुख्य भेद कहते है, जो इस प्रकार है -

"अइथूलथूलथूलं थूलसुहुमं च सुहुमथूलं च। सुहुमं अइसुहुमं इदि धरादियं होदि छब्भेयं।
भूपव्वदमादिया भणिदा अइथूलथूलमिदि खंधा। थूला इदि विण्णेया सप्पीजलतेलमादीया।
छायातवमादीया थूलेदरखंधमिदि वियाणाहि।सुहुमथूलेदि भणिया खंधा चउरक्खविसया य।
सुहुमा हवंति खंधा पावोग्गा कम्मवग्गणस्स पुणो। तव्विवरीया खंधा अइसुहुमा इदि परूवेंदि।"

अर्थात्,

अतिस्थूलस्थूल, स्थूल, स्थूलसूक्ष्म, सूक्ष्मस्थूल, सूक्ष्म और अतिसूक्ष्म ऐसे पृथिवी आदि स्कंधों के छह भेद हैं।

- अतिस्थूलस्थूल: भूमि, पर्वत
- स्थूल: जल, तेल, घी
- स्थूलसूक्ष्म: छाया, आतप
- सूक्ष्मस्थूल: चार इंद्रियों के विषय
- सूक्ष्म: कर्मवर्गणा
- अतिसूक्ष्म: कर्मवर्गणा के अयोग्य स्कंध

जैन अणु-सिद्धांत और स्कंध-विश्लेषण आधुनिक पदार्थ विज्ञान (material science) के तुल्य हैं।

जब हम आधुनिक विज्ञान, जैसे **Dalton का परमाणु सिद्धांत (1808)** का अध्ययन करते हैं, तब पाते हैं कि जिन सिद्धांतों को आधुनिक विज्ञान ने हाल में पहचाना, उनके बीज जैन आगमों और प्राकृत साहित्य में हज़ारों वर्ष पूर्व ही प्रतिपादित हो चुके थे।

Dalton की तुलना में जैन विज्ञान की अद्भुत विशेषताएँ-

बिंदु	Dalton Theory	जैन दर्शन में समता
सूक्ष्म कण	अविभाज्य परमाणु (atom)	परमाणु (अणु), स्कंध
ऊर्जा और पदार्थ का स्वरूप	पदार्थ स्थिर, ऊर्जा बाहर	पुद्गल (रूप+ऊर्जा)
गुण प्रकट होने की अवस्था	परमाणु गुणों के वाहक	स्कंध में गुण प्रकट
अविभाज्यता	परमाणु अविभाज्य	परमाणु अविभाज्य, परंतु सूक्ष्मतम शक्ति तक विश्लेषण
अस्तित्व	केवल भौतिक	द्रव्य-गुण-पर्याय त्रिक

3. अनेकान्तवाद और आधुनिक सापेक्षता सिद्धांत

अनेकान्तवाद:-

अनेकान्तवाद का शाब्दिक अर्थ है — "अनेका: अंता: इति अनेकान्त:"। अर्थात्, प्रत्येक वस्तु या विषय के प्रतिपादक अनेक पहलू

होते है। किसी भी एकांत पहलू को धारण करके करने वाला कथन मिथ्या ही होता है।

जैन दर्शन में यह मान्यता है कि:

- वास्तविकता बहुआयामी (सापेक्ष) है।
- कोई भी एकल दृष्टिकोण पूर्ण सत्य को नहीं पकड़ सकता।
- अलग-अलग दृष्टिकोण (नय) केवल आंशिक सत्य प्रस्तुत करते हैं।
- हमें सच्चाई को सापेक्ष (अपेक्षा सहित) और योग्य दृष्टि से देखना चाहिए — इसे स्याद्वाद कहा जाता है।

उदाहरण के लिए, एक मिट्टी का घड़ा:

- एक दृष्टिकोण से है (मिट्टी के रूप में)।
- दूसरी दृष्टि से नहीं है (पानी के रूप में)।
- तीसरी दृष्टि से है और नहीं है (क्योंकि उसका अस्तित्व पर्यवेक्षक और संदर्भ पर निर्भर करता है)।

जैन तर्कशास्त्र में सत्य को एकतरफा नहीं माना जाता, बल्कि हमेशा संदर्भ और दृष्टिकोण के अनुसार बहुआयामी देखा जाता है।

आधुनिक सापेक्षता (Relativity) — आइंस्टीन का भौतिक सिद्धांत

आइंस्टीन के विशेष और सामान्य सापेक्षता सिद्धांत कहते हैं:

- स्थान और समय निरपेक्ष नहीं हैं; वे प्रेक्षक (observer) के संदर्भ पर निर्भर करते हैं।
- गति, लंबाई, समय और यहाँ तक कि एक साथ घटित घटनाएँ (simultaneity) पर्यवेक्षक की स्थिति के अनुसार बदल सकती हैं।
- कोई भी एकल संदर्भ-फ्रेम (frame of reference) विशेष या सर्वोच्च नहीं होता; सभी समान रूप से वैध होते हैं।

उदाहरण:

- एक फ्रेम में जो घटनाएँ एकसाथ घटित दिखती हैं, वे दूसरे फ्रेम में अलग-अलग हो सकती हैं।
- चलती हुई वस्तु की लंबाई पर्यवेक्षक को छोटी दिख सकती है।
- भारी वस्तुओं या तेज गति के पास समय धीमा हो जाता है (time dilation)।

इस प्रकार, आधुनिक भौतिकी न्यूटन के निरपेक्ष समय और स्थान की अवधारणा को चुनौती देती है।

दोनों के बीच साम्य (Parallels)

यद्यपि अनेकान्तवाद एक दार्शनिक और तर्कशास्त्रीय विचार है, और सापेक्षता एक वैज्ञानिक सिद्धांत, फिर भी उनके बीच कुछ रोचक समानताएँ हैं:

अनेकान्तवाद (जैन दर्शन)	सापेक्षता (आधुनिक भौतिकी)
कोई एक दृष्टिकोण सम्पूर्ण सत्य नहीं बता सकता।	कोई एक संदर्भ-फ्रेम सर्वोच्च नहीं है।
विभिन्न आंशिक सत्य मिलकर व्यापक समझ देते हैं।	विभिन्न संदर्भ मिलकर भौतिक वास्तविकता समझाते हैं।
स्याद्वाद – सच्चाई को सापेक्ष और योग्य देखना।	प्रेक्षक-निर्भर मापन और सम्बन्ध।
एकतरफा मतवाद का विरोध।	निरपेक्षता (absolute) का विरोध।

4. जीव विज्ञान (Biology)

जैन दर्शन में जीव की मुक्ति ही परमार्थ प्रयोजन है, अतः जीव के स्वरूप का विशेष विवेचन है।

निश्चय से जीव शुद्ध ज्ञान-दर्शनमय और अरूपी है; व्यवहार से वह १० प्रणों से जीवित माना जाता है।

समयसार में आचार्य कुन्दकुंद कहते हैं:

"अहमेक्को खलु सुद्धो दंसणणाणमइओ सदारूवी।
ण वि अत्थि मज्झ किंचि वि अण्णं परमाणुमेत्तं पि।।"[6]

अर्थात्, मैं एक हूँ, शुद्ध हूँ, दर्शन ज्ञानमय हूँ, सदा अरूपी हूँ, अन्य कोई परभाव परमाणु मात्र भी मेरा नहीं है।

यहाँ आचार्य का उद्देश्य केवल जीव के शुद्ध स्वरूप को बताना है। अन्य सभी द्रव्य से भिन्न निज शुद्धात्म स्वयं में कैसा है, कैसा उसका स्वरूप है। और भी कहा है -

"जीवो उवओगमओ, अमुत्ति कत्ता सदेह परिमाणो।
भोत्ता संसारत्थो, सिद्धो सो विस्ससोड्डगई ।"[7]

जीव उपयोग मई (ज्ञान दर्शन मय), अमूर्तिक, कर्ता, शरीर प्रमाण, भोक्ता, संसार में स्थित है।

उपर्युक्त गाथा में जीव का स्वरूप निश्चय तथा व्यवहार दोनों प्रकार से कहा है। संसार में स्थित जीव शरीर सहित होते हुए इंद्रियों, श्वास तथा आयु आदि प्रणों से जीता है। जीव प्रणों से जीता है, इस बात को आचार्य कुन्दकुंद कहते है -

"पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीविस्सदि जो हु जीविदो पुव्वं।
सो जीवो पाणा पुण बलमिंदियमाउ उस्सासो॥"[8]

जो चार प्राणों से जीता है, जियेगा और पूर्व काल में जीता था, वह जीव है। और ये प्राण इंद्रिय, बल, आयु तथा उच्छवास है। प्राणों के आधार पर ही जैन दर्शन में जीव के भेद किए है।

वर्तमान में आधुनिक विज्ञान में भी जीव के भेद इंद्रियों के आधार पर किए गये है। प्राणों के आधार पर भेद को बताते हुए कहा गया है -

"पंचेविंदियपाणा मणवचिकायेसु तिण्णि बलपाणा।

आणप्पाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दसपाणा।।"[9]

अर्थात् पाँच इंद्रिय प्राण, मन-वचन-काय बल प्राण, श्वासोच्छवास प्राण और आयु प्राण — ये दस प्राण हैं। आधुनिक जीव विज्ञान में भी जीव के वर्गीकरण का आधार इंद्रियों और जीवन-शक्तियों पर है।

5. वनस्पति में जीवत्व (Botanical Science)

कई दर्शन पौधों को सजीव नहीं मानते, लेकिन जैन धर्म के लोग शुरू से ही जीववादी रहे हैं। छांदोग्य उपनिषद ने भी जैन धर्म के लोगों की तरह सभी प्रकार की अचल वस्तुओं, यहां तक कि आग और पानी को भी सजीवता बताया है। अरस्तू ने भी उनमें अर्ध-विकसित जीवन की ओर इशारा किया है। हालांकि, जैन धर्म के लोगों ने उनकी सजीवता के समर्थन में अवलोकन संबंधी बिंदु दिए हैं। आचारांग, सूत्रकृतांग, मूलाचार और अन्य सिद्धांतों ने बताया है कि पौधे सजीव हैं । कहते है -

"उदये दु वणप्फदिकम्मस्स य जीवा वणप्फदी होति।

पत्तेयं सामण्णं पदिट्ठीदिदरंति पत्तेयं ।।"[10]

वनस्पतिविशिष्ट स्थावर नामकर्मकी उत्तरोत्तर प्रकृतिका उदय होनेपर जीव वनस्पति-कायिक होते हैं। वे दो प्रकारके होते हैं- एक प्रत्येकशरीर और एक सामान्यशरीर। एकके प्रति नियत जो है, वह प्रत्येक है अर्थात् एक जीवका एक शरीर। जिनका शरीर प्रत्येक है, वे प्रत्येकशरीर हैं। समान ही हुआ सामान्य। जिनका सामान्य शरीर है, वे सामान्यशरीर अर्थात् साधारणशरीर हैं। उनमें से प्रत्येक शरीर प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठितके भेदसे दो प्रकार के है। यहाँ इति शब्द प्रकारवाची है। जो प्रत्येक शरीर वनस्पति बादर निगोद जीवों के द्वारा आश्रय रूप से स्वीकार किया गया है, वह प्रतिष्ठित है। और जो उनसे आश्रित नहीं है, वह अप्रतिष्ठित है। इस प्रकार इन दोनों में भेद जानना।

अन्य आचार्य भी प्राचीन काल से ही वनस्पति को चेतन ही मानते आए हैं। उन सबके द्वारा कुछ लक्षण इस प्रकार है।

- वे उत्पन्न होते हैं, युवा-वृद्ध होते हैं।
- वे बीमार होते हैं, चिकित्सा से स्वस्थ होते हैं।
- उनमें भूख-प्यास, वृद्धि, चयापचय होता है।
- काटे जाने या मरम्मत पर वे प्रतिक्रिया करते हैं।
- उनमें निष्क्रिय (potential) चेतना होती है।

ये सभी विशेषताएँ आधुनिक वनस्पति विज्ञान की खोजों के अनुरूप हैं।

जैन सिद्धांत व भौतिक वैज्ञानिक सिद्धांतों में समानताएँ और भिन्नताएँ -

जैन दर्शन गहराई से नैतिक और आध्यात्मिक है, जिसका उद्देश्य आंतरिक परिवर्तन और मुक्ति है।

आधुनिक विज्ञान व्यावहारिक और धर्मनिरपेक्ष है, जो बाह्य जगत की समझ और प्रयोग पर केंद्रित है, बिना किसी आध्यात्मिक दावे के। फिर भी, दोनों वास्तविकता की जटिलता, सीमाओं, और ब्रह्मांड की अद्भुतता को स्वीकार करते हैं — चाहे वह कर्म के लेंस से हो या क्वांटम यांत्रिकी से।

समानताएँ-

विषय	जैन दर्शन	आधुनिक विज्ञान
प्रयोगात्मक दृष्टिकोण	प्रत्यक्ष और सूक्ष्म निरीक्षण को महत्त्व देता है।	अनुभव, अवलोकन और प्रयोग पर आधारित।
सापेक्षता / अनेकान्त	अनेकांतवाद और स्यादवाद कई दृष्टिकोणों को मान्यता देते हैं।	सापेक्षता सिद्धांत, क्वांटम अनिश्चितता, और संभाव्य मॉडल पर्यवेक्षक और संदर्भ के प्रभाव को मानते हैं।
परमाणु सिद्धांत	पदार्थ को परमाणु से बना मानता है।	पदार्थ को परमाणु, उपपरमाणु कण, क्वार्क आदि से समझाता है।
आकाश और समय	अनंत आकाश और चक्रीय काल चक्र को मानता है।	ब्रह्मांड को विशाल और फैलता हुआ मानता है; समय सामान्यतः रेखीय।
पर्यावरण चेतना	सभी जीवों के प्रति अहिंसा और पारिस्थितिकी पर बल।	पारिस्थितिकी और पर्यावरण विज्ञान पारस्परिक जुड़ाव को पहचानते हैं।
गणितीय अनंत	अनंत संख्याओं और विभाजनों की चर्चा, जैसे जैन ब्रह्मांड विज्ञान में।	आधुनिक गणित अनंत के अलग-अलग प्रकारों को परिभाषित करता है (जैसे गिनने योग्य, अगिननीय)।

भिन्नताएँ-

विषय	जैन दर्शन	आधुनिक विज्ञान
उद्देश्य / लक्ष्य	मोक्ष (कर्म बंधन से मुक्ति) प्राप्ति पर केंद्रित।	प्राकृतिक नियमों की समझ, जीवन सुधार, तकनीकी प्रगति।
वास्तविकता का स्वरूप	आत्मा और जड़ में भेद, आत्मा को शाश्वत मानता है।	भौतिकवादी: पदार्थ और ऊर्जा पर केंद्रित, चेतना को मस्तिष्क क्रिया के रूप में देखता है।
ज्ञान का तरीका	आगम, तर्क और ध्यान का संयोजन।	परिकल्पना, परीक्षण, अस्वीकृति, और पुनरावृत्ति पर आधारित।
नैतिकता की भूमिका	केंद्रीय: अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ज्ञान के लिए अनिवार्य।	नैतिकता बाह्य या द्वितीयक; वैज्ञानिक तथ्य मूल्य-तटस्थ माने जाते हैं।
कार्यकारण	कर्म सिद्धांत: नैतिक कारणों से आध्यात्मिक परिणाम, कई जन्मों में।	भौतिक कार्यकारण: प्राकृतिक नियमों पर आधारित, कोई नैतिक कारण नहीं।
काल की रूपरेखा	चक्रीय समय, उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी चक्र।	सामान्यतः रेखीय समय, बिग बैंग से वर्तमान तक; कुछ सैद्धांतिक भौतिकी में चक्रीय मॉडल।

उपसंहार

जैन दर्शन के प्राकृत ग्रंथों में निहित वैज्ञानिक तथ्य आज के आधुनिक विज्ञान से अछूते नहीं हैं। जिन रहस्यों की खोज आधुनिक विज्ञान आज कर रहा है, उनका आधार पूर्वाचार्यों ने शास्त्रों में पहले ही रख दिया था। आवश्यकता है, उन ग्रंथों का गहन अध्ययन करने की।

तीर्थंकरों की वाणी केवल श्रद्धा या कल्पना नहीं, अपितु केवलज्ञान (omniscience) से उपजी है — अर्थात् कोई भी ज्ञान-क्षेत्र उनसे अछूता नहीं। विज्ञान भी ज्ञान का एक अंग ही है, अतः वह जैन शास्त्रों का अंग है। इस लेख में उन्हीं शास्त्रों के कुछ वैज्ञानिक तत्वों को प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भित ग्रंथ सूची

1. गोम्मटसारः जीवकाण्डः — आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती; गाँधी-हरिभाई-देवकरण-जैन-ग्रन्थमाला, कलकत्ता।
2. ज्ञानार्णव — आचार्य शुभचन्द्र; पण्डित बालचन्द्र शास्त्री, जैन-संस्कृति-संरक्षक-संघ, सोलापुर, ई. 1977।
3. तत्त्वार्थसूत्रम् — आचार्य उमास्वामी; कैलाशचन्द शास्त्री, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संप्रदाय, वि. नि. सं. 2479।
4. द्रव्यसंग्रहः — आचार्य नेमीचन्द्र; भारतीय दिगम्बर जैन संघ, मथुरा, वि. नि. सं. 2475।
5. नियमसारः — आचार्य कुन्दकुन्द; टीकाकार मुनि पद्मप्रभमलधारि देव, श्री कुन्दकुन्द कहान-दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई, ई. 1984।
6. पञ्चास्तिकायसंग्रहः — आचार्य कुन्दकुन्द; बोपराम हु प्रभावन भंडल, श्रीमद राजचन्द्र आश्रम, ई. 1969/1986।
7. भगवती आराधना — आचार्य शिवार्य; सखाराम दोशी, सोलापुर, ई. 1936।
8. भारतीयदर्शनम् — आचार्य बलदेव उपाध्याय; चौखम्बा ओरियंटालिया, वाराणसी, ई. 1984।
9. मूलाचारः — आचार्य बट्टकेर; संपादक पंडित कैलाशचंद सिद्धांतशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, ई. 1999।
10. समयसारः — आचार्य कुन्दकुन्द; टीका आत्मख्याति, अमृतचन्द्राचार्य, श्री वीतराग सत्साहित्य प्रसारक ट्रस्ट, भावनगर, वि. नि. सं. 2505।

सन्दर्भ ग्रन्थः

[1]द्रव्यसंग्रह, गाथा १

[2] समयसार, गाथा १३

[3] तिलोयपण्णत्ति, गाथा *1/16*

[4] जंबूद्वीपपण्णत्तिसंगहो, *13/17*

[5] पंचास्तिकाय, 75

[6] समयसार, गाथा 38

[7] द्रव्यसंग्रह, गाथा २

[8] पंचास्तिकाय, गाथा ३०

[9] गोम्मटसार जीवकांड, गाथा १३०

[10] गोम्मटसार जीवकाण्ड, गाथा १८५